This PDF you are browsing now is a digitized copy of rare books and manuscripts from the Jnanayogi Dr. Shrikant Jichkar Knowledge Resource Center Library located in Kavikulaguru Kalidas Sanskrit University Ramtek, Maharashtra.

KKSU University (1997- Present) in Ramtek, Maharashtra is an institution dedicated to the advanced learning of Sanskrit.
The University Collection is offered freely to the Community of Scholars with the intent to promote Sanskrit Learning.

Website
https://kksu.co.in/

Digitization was executed by NMM

https://www.namami.gov.in/

Sincerely,

Prof. Shrinivasa Varkhedi
Hon'ble Vice-Chancellor

Dr. Deepak Kapade
Librarian

Digital Uploaded by eGangotri Digital Preservation Trust, New Delhi
https://egangotri.wordpress.com/

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय
ग्रंथालय, रामटेक

हस्तलिखित संग्रह

दाखल क्र. ६३ वर्गांक पूजाविधी
नांव - अर्चाविधी
लेखक/लिपीकार ..... पृष्ठ..१२...
काळ ..... पूर्ण/अपूर्ण .....

कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय
ग्रंथालय, रामटेक

हस्तलिखित संग्रह

दाखल क्र. ६४ वर्गांक धार्मिशास्त्र
नांव - आन्हिकधर्मविधी
लेखक/लिपीकार ..... पृष्ठ..३...
काळ ..... पूर्ण/अपूर्ण .....

कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय
ग्रंथालय, रामटेक

हस्तलिखित संग्रह

दाखल क्र. ६५ वर्गांक वेद
नांव - सेतुबंधस्तोत्र
लेखक/लिपीकार ..... पृष्ठ...६...
काळ ..... पूर्ण/अपूर्ण .....

कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय
ग्रंथालय, रामटेक

हस्तलिखित संग्रह

दाखल क्र. ६६ वर्गांक पुराण
नांव - कपिलगीता (पद्मपुराण)
लेखक/लिपीकार ..... पृष्ठ...६...
काळ ..... पूर्ण/अपूर्ण .....

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

॥श्रीगणेशायनमः ॥ अथ जातकर्मसकल्पः॥ अद्य पूर्वोच्चरित एवं
गुणविशेषण विशिष्टायां शुभतिथौ मम अस्य कुमारस्य गर्भोद्भवान्
जनितसकलदोष निबर्हणायु मेधाभिवृध्दि बिजगर्भसमुभ्दवे
नोनि बर्हण द्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं जातकर्माख्यं कर्म करि
ष्ये॥ तदंगभूतं स्वस्ति पुण्याह वाचनं करिष्ये॥ तत्रादौ निर्वि
घ्नता सिध्यर्थं माह्नागणपति पूजनंच करिष्ये॥ ततः अनामि
कया सुवर्णतिर हितया मधु घृतं सह्राणो ~~पि स्पि~~ परि एकि कृत्य॥
तेवमिश्रितं कुमारस्य ~~ओष्ठोपरि मा~~ घ्राशयति॥ घृतंवा केवलं
कुमारं घ्राशयति॥ ॐ भुस्त्वयिदधामि॥ ॐ भुवः स्त्व

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

यिदधामि॥ ॐ स्वः स्वयिदधामि॥ ॐ भूर्भुवः स्वः संवे
त्वङ्यिदधामि॥ इत्यनेन मंत्रेण सकृत प्राशयति॥ प्रतिवाक्यु
तरे॥ अथास्यायुष्यं करोति॥ तद्यथा कुमारस्य नाभी समिपे
दक्षिणकर्णेवा॥ अग्नि रायुष्मान्नित्यादि वक्ष्यमानान् जपतो॥
अथायुष्यंकरणं॥ अग्नि रायुष्मां त्सवन स्पति भीरायुष्माꣳ
स्तेनत्वायुषा युष्मंतं करोभि सोम आयुष्मात्स ॐ षधि भिरा
युष्माꣳ स्तेन त्वा युषा युष्मंतं करोभि॥ ब्रह्म आयुष्मांत ब्राह्मणे
रायुष्मंतेनवायुरवा युष्मंतं करोभि॥ वेदते भुमी हृदयं दिविचंद्र
मसिश्रितं॥ वदाहं तन्मांत द्विद्यात्पश्येम शरद: शतं जीवेम

शरद: शतꣳ शृणुयामशरद: शतमिति च इत्यनेन मंत्रेण॥
अथैनं कुमारं अभि भृषति॥ अस्माभवेत्यस्यप्रजापति ऋषिः
अनुष्टुपछंन्द: लिंगोक्तादेवता अभिमर्षणे विनियोगः॥ आ
अस्माभव पशुभव हिरण्यमस्तुतं भव॥ आत्मावै पुत्रनामा
सि सजीव शरद: शतम्॥ इत्यनेन मंत्रेण यदि दैवान्मानुषा
द्वा प्रतिबंधो जायते स्वकाले जातकर्म कृतं तदामेधा जननं
वर्जइत्वा॥ इतिजातकर्म समाप्तः॥ श्रीलक्ष्मीनारायणा
र्पणमस्तु॥ श्रीसवितासूर्य नारायणार्पणमस्तु॥ शुभंभवतु॥

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

[OrderDescription]
,CREATED=03.08.19 15:18
,TRANSFERRED=2019/08/03 at 15:20:08
,PAGES=3
,TYPE=STD
,NAME=S0001283
,Book Name=M-64-JANKARM VIDHI
,ORDER_TEXT=
,[PAGELIST]
,FILE1=00000001.TIF
,FILE2=00000002.TIF
,FILE3=00000003.TIF
,

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection